OM 22 MAHARASHTRA final_Page 1 and 2 18/02/2015 17:49 Page 8

चालिसगांव-महा.। विधायक उमेश पाटिल को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. वंदना।

भरूच। एन.टी.पी.सी. के कैम्पस में स्वामी विवेकानंद के जन्मदिवस अर्थात् युवा दिवस के अवसर पर आयोजित हाई स्कूल के विद्यार्थियों की भाषण स्पर्धा में विजेता विद्यार्थियों के साथ समूह चित्र में ब्र.कु. रामनाथ, के. श्रीधर,जेनरल मैनेजर,एन.टी.पी.सी. तथा अन्य।

राजकोट-रविरत्नापार्क। जनजागृति के लिए निकाली गई प्रभात फेरी के दौरान उपस्थित हैं कॉर्पोरेटर जगदीश भाई पटेल, वार्ड नं. 12 के चीफ विक्रम भाई पुजारा, ब्र.कु. गीता, ब्र.कु. डिम्पल तथा अन्य।

भोपाल। पिताश्री ब्रह्मा बाबा के 46वें स्मृतिदिवस पर आयोजित प्रेस कॉन्फ्रेन्स में ईश्वरीय संदेश के साथ लक्ष्य को स्पष्ट किया तथा उस सप्ताह के कार्यक्रम की जानकारी दी।

इस्लामपुर। पुलिस स्टेशन में आध्यात्मिक कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में पुलिस निरीक्षक संजय पाटिल, ब्र.कु. अरुणा, ब्र.कु. प्रकाश तथा अन्य।

सूरत-बालाजी रोड। पाँच दिवसीय 'गीता ज्ञान रहस्य' शिविर का दीप प्रज्जवलन कर उद्घाटन करते हुए धारासभ्य सी.आर. पाटील, पूर्व मंत्री नरोत्तम भाई पटेल, हरीश भाई, बीना बहन, इंटरनेशनल स्कूल के ट्रस्टी, ब्र.कु. उषा, ब्र.कु. फाल्गुनी तथा ब्र.कु. रंजन।

बुद्धि की धार तेज़ समय में से समय निकाल कर करो

एक लड़का था और उसे कुछ काम चाहिए था। वो काम की तलाश में भटक रहा था। जगह-जगह जाकर पूछता था कि कहीं मुझे काम मिले। किसी व्यक्ति ने उसको बताया फलाने सेठ के पास चले जाओ, वो तुम्हें काम देगा। वो लड़का उसके पास चला गया। वहाँ जाने के बाद उसने सेठजी से विनती की कि क्या आप मुझे काम दे सकते हैं? सेठ जी ने पूछा तुम क्या काम कर सकते हो? कहा कुछ भी कर सकता हूँ। सेठजी के पास बड़ा भारी लकड़ियों का स्टॉक था। उस लड़के को कहने लगे, देखो ये लकड़े काटने हैं। लड़के ने कहा काट दूंगा। तो कहा ठीक है, सुबह इतने बजे आना और इतने बजे जाना, सारा दिन लकड़ी काटना होगा। उसने कहा, हाँ, काटूंगा और उसने काटना आरंभ किया। दिन के अंत में सेठजी ने देखा कि पच्चीस लकड़े कट गये थे। वे बड़े खुश हो गये और कहा कि तेरे पास तो अच्छी शक्ति है काटने की। तो कहा ठीक है, तुम आज से काम पर आ जाओ रोज़ आकर के तुम्हें लकड़े काटने हैं। वो रोज़ जाता रहा। अपने टाइम पर जाता था और टाइम पर वहाँ से निकलता था। सारा दिन आराम भी नहीं करता था। सारा दिन लकड़ी काटता था। हफ्ता बीत गया सेठजी चक्कर लगाने निकले और उस लड़के के पास पहुंच गए। देखा कि सारे दिन में उसने सिर्फ पन्द्रह लकड़े काटे हैं। तो कहा कि पहले दिन तो पच्चीस काट दिए, आज पन्द्रह लकड़े कैसे कटे! तो लड़का कहने लगा सेठजी, यही मैं भी नहीं समझ पा रहा हूँ कि पहले दिन मैंने तो पच्चीस काट दिये थे। लेकिन पता नहीं क्यों? मैं लकड़ी काटता हूँ और आराम भी नहीं करता हूँ। उसके साथियों ने भी कहा कि ये आराम नहीं करता है। सारा दिन लगा रहता है। तो फिर कहा पंद्रह ही क्यों काटे? कहा, यही तो पता नहीं चल रहा है। सेठजी ने कहा तेरी क्षमता कम क्यों हो रही है? तुम अपनी क्षमता को बढ़ाओ। तो उसने कहा ठीक है कल से मैं कोशिश करूंगा कि और अधिक लकड़ी काट सकूं। हफ्ता बीता। हफ्ते के बाद पुनः सेठजी चक्कर लगाने गए, तो देखा कि सारे दिन में उसने सिर्फ दस लकड़े काटे हैं। सेठजी ने फिर पूछा कि पहले दिन तो तुमने पच्चीस काट दिये थे। दूसरे सप्ताह तक तुमने सिर्फ दस ही काटे हैं। इतनी कम तेरी क्षमता क्यों हो गयी है? लड़के ने कहा कि यही बात तो मैं भी नहीं समझ पा रहा हूँ। सारा दिन मेहनत करता हूँ। खूब मेहनत करता हूँ। ज्यादा लकड़े अब कटते ही नहीं हैं।

सेठजी ने सवाल पूछा कि तुमने कुल्हाड़ी की धार एक बार भी तेज़ किया है? तो लड़का कहने लगा सेठजी, टाइम कब मिलता है? सारा दिन तो लकड़ी काटता हूँ। टाइम कब मिलता है कि मैं कुल्हाड़ी की धार को तेज़ करूं? अब उस लड़के को क्या कहेंगे? समझदार कहेंगे! मेहनत खूब कर रहा है और क्षमता क्षीण हो रही है, उसके पास धार तेज़ करने का टाइम नहीं है। अरे उसी में थोड़ा टाइम निकालकर धार तेज कर लो, कम मेहनत में तुम अधिक क्षमता वाला कार्य कर सकते हो। लेकिन ये बात उसकी बुद्धि में बैठती ही नहीं थी। ठीक इसी प्रकार आज की दुनिया के मनुष्य हैं जो कि सारा दिन कार्य करते हैं और कार्य में ही व्यस्त रहते हैं। लेकिन जब उनको कहो कि तुम अपनी बुद्धि की धार को तेज करने के लिए थोड़ा ज्ञान-अमृत का पान करो, तो क्या कहते हैं कि हमारे पास टाइम नहीं है। टाइम मिलेगा तो सुनने के लिए ज़रूर आयेंगे। अरे उसी में से ही टाइम निकालो और बुद्धि की धार को तेज़ कर दो। जब बुद्धि की धार ज्ञान के आधार से तेज़ हो जाती है तो विवेक शक्ति बढ़ जाती है तथा आंतरिक क्षमता भी बढ़ जाती है। जिससे हम कम समय में अधिक कार्य कुशल बन सकते हैं। लेकिन वही लड़के वाली मनःस्थिति कि टाइम मिलेगा तो करेंगे। टाइम तो सारी ज़िंदगी मिलने वाला नहीं है। मिलेगा टाइम? क्या कहेंगे टाइम मिलेगा? भगवान अगर चौबीस घण्टे के पच्चीस घण्टे भी बनाकर दे, कि चलो एक घण्टा एक्स्ट्रा बना दिया तुम्हारे लिए, तो भी मनुष्य कहेगा कि टाइम नहीं है। वो टाइम कहां चला जायेगा पता ही नहीं चलेगा। इसलिए कहा एक बार जिसने ज्ञान को धारण किया, वो सदा अपनी बुद्धि को ऐसा तेज़ कर देता है कि सदा शाश्वत् रूप में अपने अंदर रहता है।

परम आनंद की...

- पेज 3 का शेष

अनुभव नहीं करेंगे तो और कौन करेगा... जिन्हें साथ देने वाला स्वयं प्रभु हो, यदि वे ही सदा उसके साथ नहीं रहेंगे तो और कौन रहेगा... इसलिए हे योगी, अब तू उसी के साथ जीवन बिता...

लहरें अविरल गति से अपना काम कर रही थीं... कभी ऊंची उठती थीं, कभी लोप हो जाती थीं। मानो संदेश दे रही हों... हे योगी, तुम भी इसी तरह लहराना सीखो... तुम गमगीन क्यों हो... सागर के बच्चे भी यदि नहीं लहराएंगे... तो और कौन लहराएगा... देख स्वयं भगवान तुम्हारे आगे चल रहा है... उसके साथ होते भी तुम चिन्तित क्यों हो जाते हो... और योगेश का मन अत्यन्त प्रफुल्लित हो गया। उसे समय का भी बोध न रहा।

उसे प्रभु की लीलाएं याद आने लगीं... अन्तर्मन से आवाज़ उठी, तू उसके प्यार में मग्न हो जा... केवल भगवान से ही प्यार कर... मनुष्यों के प्यार में धोखा है... योगियों को मनुष्यों की प्रीत में नहीं बहना चाहिए। तुम्हें तो भगवान का प्यार मिला है... अब तो अपने प्रेम के धागों से प्रेम के सागर को बांध ले। तू केवल उसे प्यार में ही बांध सकता है। याद कर, गोप-गोपियों ने उसे प्रेम की रस्सी में बांध लिया था... अर्जुन के प्यार में भी वह बंध गया था, परंतु कंस व दुर्योधन उसे कदापि न बांध सके। हे योगी, मग्न हो जाओ प्रभु प्यार में... तुम्हारे प्यार के अश्रु मोती तुम्हारी विजय माला बन जायेंगे।

तभी उसका ध्यान सागर के मध्य की ओर गया... लहराते सागर के मध्य सीना ताने खड़ी छोटी-छोटी पहाड़ियाँ उसे संदेश दे रही थीं...

योगी, देख हम सागर के तूफानी लहरों के बीच भी अटल हैं... इसके भयंकर तूफान हमारा कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते... फिर तुम क्यों माया की छोटी-छोटी लहरों से ही विचलित हो जाते हो... हे योगी, सागर का धर्म लहराना है और हमारा धर्म अटल रहना है... तुम भी अटल रहना अपना स्वधर्म बना लो... फिर तुम तो प्रकृति के और इस सागर के भी मालिक हो... प्रकृति तो तुम्हारी सेवा में प्रस्तुत है... तुम मालिक बनो, अधीन मत बनो।

और उसको लगा मानो सागर बाहें पसार उसका आह्वान कर रहा हो...

हे मेरे मालिक, मैं कब से तुम्हारा इन्तज़ार कर रहा हूँ... मैं तुम्हारी जन्म-जन्म सेवा करूँगा... हे ईश, मेरी सेवाएं स्वीकार करो... मेरे गर्भ में अनंत धन राशि है, हीरे-मोती हैं... वे सब तुम्हारे स्वर्ग को सुशोभित करेंगे...

अपने सेवक की विशालता को निहारकर और अपनी साधारणता को जानकर उसका मन नीरस हो उठा... और तब ही उसने देखा अचानक सागर से बादल उठे और अश्रु बहाने लगे... शायद वे भी योगी की नीरसता पर उदास हो गये थे... तब उसे झटका सा लगा... उसके विवेक की गांठ खुली और उसे अपने प्राण प्रिय परमात्मा के उपकार याद आने लगे... याद कर उसने तुम पर कितना उपकार किया... यदि वह तुम्हारी इस जीवन यात्रा में तुम्हारा मित्र न बनता तो तुम कहां होते... जीवन का बोझ ढ़ोते-ढ़ोते थक गए होते... तुम्हारे पैरों में पड़े छाले तुम्हारे दुःखों की गाथाएँ दोहराते... विषयों में डूब-डूब कर तुम सुख चैन की तलाश में भटकते होते... शान्ति के भिखारी बनकर मन्दिरों व साधुओं के द्वार खटखटाते... बेसहारे होकर प्रभु को पुकारा करते और आज... आज तुम प्रभु की शीतल छत्रछाया में हो... उसकी पालना में पल रहे हो... उसकी ही नज़रों में जी रहे हो... और तब उसे लगा कि उसके ऊपर स्वयं सर्वशक्तिवान छत्र बनकर उपस्थित है। वह आनंद विभोर हो उठा... मन की नीरसता लोप हो गई... उसकी मन-वीणा में आवाज़ गूँज उठी...

जिसने तुम्हें नवजीवन का दान दिया... जिसने तुम्हें जीवन भर साथ देने का वायदा किया... जिसने रात-दिन तुम्हारा श्रृंगार किया... जिसने तुम्हारे सभी बोझ हरकर तुम्हें जीवन का सुख प्रदान किया... जिसने तुम्हारे जीवन में चैन की बंसी बजाई... जो जीवन राहों पर तुम्हारा सच्चा साथी बना... उसे तुम क्यों भूल जाते हो... उस सच्चे हितैषी, सच्चे प्रियतम को भूल तुम किसे याद करते हो...

इस प्रकार आनंद की गहन अनुभूतियों में मग्न हो गया योगेश...

जब उसे जाने का बोध हुआ तो देखा दस बजे थे और वह तीव्रता से घर की ओर लौटा।